

मुनि ने कहा प्यारे राम दोनों भाई ।

मीठे फल खाओ बगिया में जाई ॥

आप बैठे रिषी ध्यान लगाकर

हमने वंदन किया शीश झुकाकर

चले दोऊ भैया हर्ष बढ़ाई ॥

चलते चलते दीखी सुन्दर फुलवाड़ी

चारौ ओर जाके आज के द्वारी

अशोक वृक्षों से तहां छाया सुहाई ॥

चंदन द्वार पर सखियां खड़ी थीं

कर कमलों में जिनि छड़ियां सोनी थी

बगियां जाने की तिनि रोक लगाई ॥

मृदु मुस्कान से जो लखण निहारा

दोनों सखियों ने निज तन मन हारा

गिरीं धरणी पर होश भुलाई ॥

खुल गया रस्ता गए बाग भीतर

रंगा रंगी फूलों से शोभा थी मनहर

नंदन आदि बनों से छवि अधिकाई ॥

शत खण्ड खण्ड वाले सुन्दर थे तरुवर

जिनि की बादल सम छाया थी गहबर

रवि तेज को भी तिनि चान्दनी बनाई ॥

दयाल चंदन की थी सुगंधि अपारी  
नए नए मूर भरे रसालों की डारी  
त्रिविधि समीर बहे हिय हुलसाई ॥

फूल वाटिका का यह देखि निज़ारा

आनंद मगनु हुआ हृदय हमारा  
कहा मैंने लखण से अति उमगाई ॥

वाटिका बीथियों में जब घूमते थे  
उन्मति आनेद में तब झूमते थे  
यौवन मादकता अंगनि में समाई ॥

कैसी सुन्दर यह थी वाटिका विदेह की  
उमड़ि रही थी मानो सरिता सनेह की  
जहां तहां बसंत की बहारी है छाई ॥

कौसल पुरी भी मैया है अति सुहावन  
पर एक भी दृष्य नहीं ऐसा मन भावन  
वैभव विदेह लखि वैकुण्ठ लजाई ॥

परम रम्य आराम ले मैया  
मन नयन प्राणनि को सुख दैया  
बिना फल खाए भए हैं अघाई ॥

आज का दिवस मौज मंगल मई है  
रोम रोम में मौज मस्ती भई है  
प्रेम प्रकाश जिय जोति जगाई ॥

गद् गद् हो बोले लखण प्यारे

वाह वाह इस वेल पै बलहारे

सुखमा सभोई आज मिली है वाधाई ॥

रघुकुल रवि करि कृपा बताओ

प्रेम प्रकाश का भाव समुझाओ

शिष्य हूं तुम्हारा मैं दादा रघुराई ॥

कहा मैंने जीवन सुधा वर्षे जलधर

सौरभ आमोदित ज्यों कमला घर

प्रेम की झलक तियों अति सुखदाई ॥

उदित मदन में मोद जो पावन

भोज़ लिपिसा बनि सरस सुहावन

मन हो मुग्ध जहां सुभाव विहाई ॥

दोऊ कर जोड़ि पूछा फिर से लखण ने

कैसा सुख सार है श्री जू के सदन में

गूढ़ तत्व रस का कहो समुझाई ॥

नितु नव के उठे उदिगारे

मीठे मीठे भावों के वर्षे फुहारे

लखे सो लखण जाने मगन लगाई ॥

विनीति लखण कहा चतुर चूड़ामणि

रस उदिगारों का सुवाली सुरुभ भणि

बड़े ही सौभाग्य से यह रचना चलाई ॥

सुनो तात जैसे गज मस्ती में आता  
गण्ड स्थलों से मधु धारा बहाता  
सर्व इन्द्रियों से त्यों हर्ष वर्षाई ॥

मधु से मधुर यह प्रेम रस प्यारा  
सुधा से सरस यह अमर उज्यारा  
प्रमल चंदन सी है महक सुहाई ॥

निशाकर से भी नूतन रस वाला  
आम हैं अंगूर से भी मृदुता में आला  
कामिनी अधर से भी बड़ी मधुराई ॥

शांति सुर में भाव कमल खिड़ाए  
बृहज् ज्ञानियों के बृहन्नन्द को भुलाए  
ऐसे सुख सागर को वन्दन सदाई ॥

लखण कहा देखो मेरे गुर भ्राता  
कालागर चन्दन का तरु सुख दाता  
हरे लाल पंखे जांके डार लपटाई ॥

तरु बीच कोकिल पंचम में गावें  
गांधार आदि भी तानि भुलावें  
धेवत खरज मोर सारस सुनाई ॥

बड़े बड़े माट सम आम फल लटके  
नन्हें शुक सहसों जाय चोंच अटके  
रस झरणों में वह जात है बहाई ॥

आ पुत्र! आ पुत्र! तब दातोह उचारा  
सुनके मधुर धुनि तुमको सम्भारा  
तुमरी पुकार सम मेरे मन भाई ॥

आगे चले देखा रिछ सिंह शिशु चरिते  
वैर को विहाय खेल कूद मिलि करते  
काले पीले मृग करें केल सुखदाई ॥

गरीबि श्री खण्डि कहा देखो बट ओरी  
दिव्य चान्दनी है फैली मधुर रस बोरी  
लखि नैन चकोरों ने निज निधि पाई ॥  
मीठे फल खाओ बगियां में जाई ॥